संपादकीय

बैंकिंग में सख्ती जरूरी

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने देश के सरकारी बैंकों की जो तस्वीर पेश की है, वह चिंता में डालती है। आरबीआई के मुताबिक सार्वजनिक क्षेत्र के 21 बैंकों ने अप्रैल 2014 से अप्रैल 2018 तक जितना ऋण वसूल किया, उसके सात गुने से ज्यादा बट्टा खाते (राइट ऑफ) में डाल दिया। यानी इन कर्जों को डूबा हुआ मानकर उन्होंने अपने कर्ज खाते से हटा दिया है। हां, इनके नाम पर कुछ वसूली हो जाए तो उसको वे अपनी आमदनी के खाते में दिखा देंगे।

ठोस रूप से कहें तो सरकारी बैंकों ने 44,900 करोड़ रुपये के लोन की वसूली की है और 3 लाख 16 हजार 5 सौ करोड़ रुपये बट्टा खाते में डाल दिए हैं। आरबीआई ने ये आंकड़े संसद की वित्तीय समिति के सामने पेश किए हैं। 2014 के बाद से बैंकों के एनपीए में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। 2014-15 में यह कुल कर्जे का 4.62 फीसदी था। 2015-16 में बढ़कर 7.79 हो गया। 2017-18 में इसमें तेज बढ़ोतरी हुई और यह 10.41 फीसदी तक जा पहुंचा। 2018 मार्च के आखिर तक इनकी वसूली दर 14.2 फीसदी रही।

स्वाभाविक है कि बैंकों का संकट एक राजनीतिक मुद्दा बन चुका है और यह असाधारण समस्या अपने लिए असाधारण समाधान भी मांग रही है। रिजर्व बैंक ने इसके लिए कई नियम बनाए हैं और सरकार ने दिवालिया कानून में बड़े बदलाव करके वसूली सुधरने की गुंजाइश बनाई है। दिवालिया घोषित किसी कंपनी की खरीद के लिए लगाई जाने वाली बोली में कंपनी के मौजूदा प्रवर्तक अभी तब तक हिस्सा नहीं ले सकते, जब तक उन्होंने बैंकों से लिए गए कर्ज का भुगतान न कर दिया हो। इससे दिवाला बोलकर भी नीलामी के जरिये कंपनी पर कब्जा बनाए रखने के खेल पर रोक लगी है।

समस्या की जड़ एक हद तक मंदी के बाद बने व्यापारिक माहौल से भी जुड़ी है, लेकिन कर्ज लेकर वापस न करने की बीमारी हमारे यहां बहुत पुरानी है। इस पर रोक तभी लगेगी, जब बैंकों से लिए गए कर्ज को घर की खेती समझने वाली कंपनियों और व्यक्ति यों में खौफ पैदा हो। पिछले कुछ समय में विकास को गति देने के नाम पर कई उद्यमियों को आंख मूंदकर कर्ज दिए गए, जिनमें से कई भगोड़े हो चुके हैं। इसके अलावा बैंकों ने कई योजनाओं के तहत भी अंधाधुंध ऋण बांटे हैं, जिनकी वापसी की कोई गारंटी नहीं थी।

एक तरफ कहा जा रहा है कि बैंकों के कर्मचारियों में भ्रष्टाचार फल-फूल रहा है, दूसरी तरफ बैंक के कर्मचारी कह रहे हैं कि उनके ऊपर काम का भारी बोझ है। आधार और पैन कार्ड बनाने से लेकर तमाम सरकारी योजनाओं के पालन की जिम्मेदारी उन पर ही है, ऊपर से तकनीकी प्रणाली भी पुरानी है। असल में सबसे बड़ी समस्या देश की बैंकिंग पॉलिसी में है। अर्थव्यवस्था को रास्ते पर रखने के लिए बैंकों का चुस्त-दुरुस्त रहना जरूरी है, लेकिन यह तभी संभव है जब कर्ज बांटने में रुतबे और रसूख के लिए कोई जगह न छोड़ी जाए।

टीआरपी के लिए पिच पर नागिन डांस

मैच तो भारत-बांग्लादेश, भारत-श्रीलंका के बीच होते हैं। भारत-पाक के बीच तो युद्ध होता है युद्ध। युद्ध की अपनी टीआरपी व्यवस्था यानी टेलीविजन रेटिंग पाइंट्स व्यवस्था होती है।

युद्ध बिकता है, बहुत बिकता है। भारत-पाक का मैच हो तो भी बिकता है और बिग बास के सेट पर दो बंदों या बंदियों के बीच हो, तो भी बिकता है। एक टीवी चैनल वाला बता रहा था कि अगर पति-पत्नी सामान्य-सी हंसी-खुशी जिंदगी जीने लगें तो कोई सीरियल न बनता। यही पति-पत्नी रोज युद्ध करें, एक-दूसरे पर अफेयरबाजी के आरोप लगें, तो बहुत शानदार कमाई वाला सीरियल बन जाता है। कुल मिलाकर हाल यह है कि भांति-भांति के युद्धों से कइयों को तरह-तरह के रोजगार मिल रहे हैं। पर, युद्ध से भी

पब्लिक मुंह फेर ले, तो फिर टीवी चैनलों की आफत हो लेगी कि क्या दिखायें। खबर है कि हाल में एशिया कप में भारत-पाक के बीच जो मुकाबला 19 सितंबर, 2018 को हुआ था, उसकी टीआरपी कमजोर रही है-सिर्फ 3.5 बिंदु। एक साल से कुछ ज्यादा वक्त हुआ, 18 जून, 2017 भारत-पाक मैच की टीआरपी 9.1 बिंदु थी। यानी पब्लिक की भारत-पाक युद्ध में भी रुचि कम हो रही है।

पब्लिक भारत-पाक युद्ध भी न देखे, तो फिल्म, टीवी वालों की बहुत दिक्कतें हो जाती हैं। सनी देयोल को लोग उनकी कई साल पहले बनी फिल्म 'गदर' के लिए याद कर लेते हैं। उसमें सनी देयोल ने रक्षा का वह स्वर्णिम सिद्धांत प्रतिपादित किया था कि पाक के न्यूक्लियर बमों से भी हमें न डरना चाहिए। हम हैंडपंपों से पाकिस्तान का मुकाबला कर लेंगे। बस हैंडपंपों की सप्लाई किसी भी तरह से बाधित न होनी चाहिए। ऐसे सिद्धांत देने वाले सनी देओल के रोजगार पर खतरा मंडरा सकता है। कुल मिलाकर भारत-पाक मारधाड़ से बहुतों को बहुत तरह का रोजगार मिलता है।

पर भारत-पाक मैच युद्ध भी न देखे जायें तो फिर क्या होगा– टीवी चैनल वालों को यह चिंता सता रही है।

एक एक्सपर्ट बता रहे थे कि चूंकि भारत-पाक मुकाबले में विराट कोहली नहीं थे, इसलिए इस मुकाबले में पब्लिक की रुचि न बनी और इस मैच की टीआरपी उर्फ रेटिंग गिर गयी। टीवी चैनल कमाई के मामलों में घणे निर्मम होते हैं। टीआरपी आनी ही चाहिए, विराट कोहली अगर मौजूद नहीं हैं तो चैनल वाले पिच पर नागिन डांस तक करा सकते हैं– टीआरपी के लिए।

नागिनों के निशाने टेलीविजन रेटिंग पर अचूक हैं, एकदम अचूक। विराट कोहली के विकल्प के तौर पर नागिन आयेगी पिच पर, नहीं, नहीं, यह ख्याल जिन्हें डराता है, उन्हें समझ लेना चाहिए कि टीवी में धंधा देने वाली रेटिंग से बड़ा कुछ भी न होता, विराट कोहली भी नहीं।

मुझे डर सता रहा है कि अगले किन्हीं भारत-पाक मैचों में मुझे बीच पिच पर-तन डोले मेरा मन डोले धुन पर भारतीय क्रिकेटर ही डांस करते न दिख जायें।

आर्थिक असमानता व गरीबी उन्मूलन के द्वंद्व

मोदी सरकार ने उज्ज्वला योजना के अंतर्गत गरीबों को गैस के सिलेंडर वितरित किये हैं, मुद्रा योजना के अन्तर्गत किसानों को सस्ते ब्याज पर ऋण दिये हैं और आयुष्मान भारत योजना के अन्तर्गत स्वास्थ बीमा उपलब्ध कराया है। इन नीतियों का निश्चित रूप से गरीबी उन्मूलन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। लेकिन इसके साथ-साथ असमानता में वृद्धि भी हो सकती है। बड़ी कंपनियों द्वारा अरबों रुपये कमाए जाएं, उनके अधिकारी ऐशो-आराम का जीवन व्यतीत करें तो असमानता बढ़ती है। इन्हीं बड़ी कंपनियों से टैक्स वसूल करके गरीब को रोटी, कपड़ा और मकान उपलब्ध कराया जा सकता है, जिससे गरीबी दूर होगी।

असमानता में वृद्धि अनिवार्य है। जब सृष्टि ब्लैकहोल से निकल कर प्रकट हुई तो वह 'समान' रही होगी। समय क्रम में अलग-अलग तत्व प्रकट हुए और तत्वों के बीच असमानता उत्पन्न हो गई। इसके बाद जीव और निर्जीव तथा चेतन एवं अचेतन का अंतर उत्पन्न हुआ। असमानता बढ़ती गई। एक ही परिवार में एक बेटा बहुत आगे बढ़ जाता है जबकि दूसरा पीछे रह जाता है। कारण कि हर व्यक्ति बराबर श्रम नहीं करता है।

दरअसल, नई तकनीकों द्वारा उत्पादन में श्रम का न्यून उपयोग होता है। एक कुशल कर्मचारी 10-20 आटोमेटिक लूम का संचालन कर लेता

है। ऐसे कर्मचारी का वेतन ऊंचा होना स्वाभाविक है। साथ-साथ आटोमेटिक लूम के उपयोग के कारण अकुशल श्रमिकों की मांग कम हो जाती है और उनके वेतन कम हो जाते हैं। इसके अलावा आर्थिक विकास के प्रारंभिक समय में आम आदमी की खपत को घटा कर निवेश किया जाता है, जिससे असमानता बढ़ती है। जैसे अठारहवीं सदी के इंग्लैंड में श्रमिकों के वेतन न्यून से भी कम कर दिए गए और बची रकम को फैक्टरियों में निवेश किया गया। एक तरफ स्टीम इंजन से चलने वाली कपड़ा मिलें लगाई जा रही थीं और दूसरी तरफ श्रमिक भूखों मर रहे थे। इन फैक्टरियों से भारी मात्रा में उत्पादन हुआ और उद्यमी अमीर हो गए। श्रमिक के वेतन में कटौती और उद्यमी की आय में वृद्धि साथ-साथ हुई।

भारत एवं चीन आज इसी प्रक्रिया से गुजर रहे हैं। दोनों देशों में असमानता में भारी वृद्धि हो रही है और साथ-साथ आर्थिक विकास दर चरम पर है। भारत में नक्सलवादी गतिविधियों का बढ़ना एवं आर्थिक विकास दर का नौ प्रतिशत तक पहुंचना साथ-साथ हासिल हुआ है।

असमानता में वृद्धि के साथ-साथ गरीबी उन्मूलन संभव है। जैसे जमींदार द्वारा बंधुआ मजदूर को रोटी, कपड़ा और मकान उपलब्ध करा दिया जाए तो गरीबी दूर हो जाएगी परन्तु असमानता बनी रहेगी। लेकिन असमानता में वृद्धि के साथ-साथ गरीबी में वृद्धि भी संभव है। जैसे अंग्रेजों के शासनकाल में भारत में असमानता के साथ-साथ गरीबी का भी विस्तार हुआ था। अतः असमानता में वृद्धि के साथ-साथ गरीबी उन्मूलन हो सकता है और नहीं भी।

ऐसे में मोदी सरकार ने उज्ज्वला, मुद्रा और आयुष्मान भारत के अन्तर्गत असमानता में वृद्धि के साथ-साथ गरीबी उन्मूलन की नीति को अपनाया है। जैसा कि यूपीए सरकार ने रोजगार गारंटी, बीपीएल को सस्ता अनाज एवं किसानों के ऋण माफी आदि कार्यक्रमों के अन्तर्गत किया था। सोच है कि बढ़ती असमानता की अनदेखी की जाए और ध्यान गरीबी उन्मूलन पर केंद्रित किया जाए। बढ़ती असमानता से वह उद्वेलित नहीं होगा।

वास्तव में गरीबी उन्मूलन से गरीब की असमानता का विरोध करने की शक्ति में वृद्धि होती है। जैसे बस्तर आदि क्षेत्रों में गरीबी पहले से कम हुई है।

शौर्य दिवस का औचित्य

आज सोशल मीडिया पर जनता महत्वपूर्ण घटनाओं में अपनी सहभागिता बढ़-चढ़कर प्रदर्शित कर रही है। पाकिस्तान के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक की सालगिरह पर सोशल मीडिया विभिन्न संदेशों से भरा पड़ा है। स्वतंत्र भारत की पहली सरकार ने काफी सतर्कता और समझदारी से सेना को संगठित किया था। जबकि इससे पूर्व ब्रिटिश सरकार सेना और अन्य संस्थानों को अपनी सत्ता को कायम रखने के लिए और स्वतंत्रता आंदोलनों को कुचलने के लिए प्रयोग कर रही थी और भारत को इन्हें यथावत हस्तांतरित किया था। नेहरू युग में सेना के ढांचे को देशभक्ति और भारत की एकता और अखंडता को कायम रखने की जिम्मेदारी सौंपकर उसे एक नया स्वरूप दिया गया था। परंतु तब भी सरकार द्वारा सेना की उपलब्धियों को अपनी सफलता के रूप में प्रस्तुत किया गया, जैसा कि 1962 के युद्ध में या फिर लाल बहादुर शास्त्री द्वारा जय जवान जय किसान का नारा रहा हो या बांग्लादेश की आजादी के बाद इंदिरा गांधी को दुर्गा की उपाधि देना। यहां तक कि भाजपा की सरकार भी इससे अछूती नहीं रही।

आज भी सरकार सेना की सफलता को अपनी उपलब्धियों में गिनकर उसी तरह से सेना द्वारा की गई सर्जिकल स्ट्राइक की यादों को भुलाने नहीं देना चाहती। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पूर्व सैन्य अधिकारी भी इस तरह के राजनीतिक हथकंडों से अच्छी तरह परिचित हैं, सरकार द्वारा सर्जिकल स्ट्राइक का लगातार विज्ञापन करके इसका इस तरह से खुलेआम राजनीति प्रयोग करना पूरी तरह से समझ रहे हैं। राजग सरकार द्वारा सैनिक कार्रवाइयों का राजनीतिक प्रयोग समाज के हित में उचित नहीं है। इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हम पाकिस्तान में देख सकते हैं। जहां पर सैनिक कार्रवाइयों का विज्ञापन देश को धार्मिक कट्टरपंथ और उग्रवाद की तरफ धकेल रहा है। सरकार द्वारा सेना का इस तरह से राजनीतिक लाभ के लिए प्रयोग देश के लिए हितकर नहीं है।

यह सीरीज युवाओं के लिए खुद को साबित करने का मौका : रहाणे

राजकोट (आरएनएस)। भारतीय टेस्ट टीम के उपकप्तान अजिंक्य रहाणे ने कहा है कि वेस्टइंडीज के खिलाफ होने वाली टेस्ट सीरीज युवाओं के लिए खुद को साबित करने का मौका है। भारत को यहां गुरुवार से वेस्टइंडीज के साथ दो मैचों की टेस्ट सीरीज का पहला मैच खेलना है। चयनकर्ताओं ने इस सीरीज के लिए कई युवा खिलाड़ियों को मौका दिया है। इनमें सलामी बल्लेबाज पृथ्वी शॉ, मयंक अग्रवाल, मोहम्मद सिराज और हनुमा विहारी शामिल हैं।

रहाणे ने अभ्यास के बाद संवाददाता सम्मेलन में कहा, पृथ्वी, सिराज और मयंक जैसे युवा खिलाड़ियों ने भारत-ए के लिए हाल में अच्छा प्रदर्शन किया है। इन खिलाड़ियों का घरेलू सीजन अब तक काफी अच्छा रहा है।

उन्हें इस टीम के नियम पता है। हालांकि मुझे लगता है कि टीम प्रबंधन भी इनका काफी समर्थन कर रहा है। उन्होंने कहा, इन खिलाड़ियों के लिए यह जरुरी है कि वे भविष्य को भूलकर अच्छा प्रदर्शन करने पर ध्यान दें। मुझे लगता है कि यह सीरीज इन युवा खिलाड़ियों के लिए खुद को साबित करने का मौका है।

भारतीय उपकप्तान ने मैच को लेकर कहा, जब भी आप वेस्टइंडीज, इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया जैसी मजबूत टीमों के साथ खेलते हैं तो एक टीम के रूप में हमारे लिए यह जरुरी हो जाता है कि हम व्यक्तिगत तौर पर भी और एक टीम के रूप में भी अपने खेल में कैसे सुधार करें। हम अच्छा क्रिकेट खेलने जा रहे हैं। मुंबई के सलामी बल्लेबाज शॉ इस सीरीज के जरिए टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण कर सकते हैं। उन्होंने हाल में भारत-ए के लिए अच्छा प्रदर्शन किया है। रहाणे ने कहा, मुझे शॉ के लिए खुशी है। मैंने उन्हें करियर की शुरूआत से देखा है। हम साथ में अभ्यास करते थे। वह आक्रामक सलामी बल्लेबाज हैं और भारत-ए के लिए अच्छा खेलने का फल उन्हें मिला है। मैं उन्हें शुभकामनाएं देता हूं। मुझे उम्मीद है कि वह अच्छा खेलेंगे। मैं चाहता हूं कि वह उसी तरह खेले जैसे मुंबई और भारत-ए के लिए खेलते हैं।

टेस्ट टीम चयन पर बवाल: कप्तान विराट कोहली ने किया बीसीसीआई का बचाव

नई दिल्ली (आरएनएस)। वेस्ट इंडीज के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए चुनी गई भारतीय टीम को लेकर मचे बवाल पर कप्तान विराट कोहली ने भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) का बचाव किया है। राजकोट टेस्ट से एक दिन पहले प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान जब वह मीडिया के सामने आए तो उन्हें टीम सिलेक्शन को लेकर कई तीखे सवालों का सामना करना पड़ा। यहां भारतीय कप्तान ने सिलेक्टरों का बचाव करते हुए इस सीरीज में बेंचमार्क तय करने की बात कही है।

विराट बोले, बेंचमार्क सेट करना चाहते हैं

उन्होंने कहा, हम इस सीरीज में बेंचमार्क सेट करना चाहते हैं। कुछ युवा खिलाड़ी टॉप ऑर्डर में आते हैं तो उन्हें अपना कौशल दिखाने का मौका मिलता है। मेरे ख्याल से युवा खिलाड़ियों के लिए यह अच्छा मौका होगा। उल्लेखनीय है

कि सिलेक्टरों पर उस वक्त सवाल उठने लगे, जब दो मैचों की सीरीज के लिए चयनित टीम में करुण नायर और एशिया कप में शानदार प्रदर्शन करने वाले रोहित शर्मा को मौका नहीं मिला। नायर को इंग्लैंड दौरे पर टीम में शामिल किया गया था, लेकिन किसी भी मैच में नहीं खिलाया गया।

रोहित, धवन को मौका नहीं देने पर दिग्गजों ने उठाए थे सवाल

बता दें कि वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए रोहित शर्मा, शिखर धवन, भुवनेश्वर, करुण नायर और बुमराह को टीम में शामिल नहीं किया गया था। एशिया कप में अपनी कप्तानी में टीम इंडिया को जीत दिलाने वाले रोहित को भी टीम पर बाहर रखने पर दिग्गजों ने सवाल उठाए थे। भारत के पूर्व कप्तान सुनील गावसकर ने भी तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार और जसप्रीत बुमराह को आराम देने पर सवाल उठाया है। भारतीय स्पिनर हरभजन सिंह ने करुण को बिना खेले टीम से बाहर करने पर चयनकर्ताओं पर निशाना साधा था।

पृथ्वी ने घरेलू क्रिकेट में किया उम्दा प्रदर्शन: कोहली

पृथ्वी शॉ और मयंक अग्रवाल के बारे में उन्होंने कहा कि पृथ्वी शॉ, हनुमा विहारी और मयंक अग्रवाल ने डोमेस्टिक क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन किया है। उन्हें इस सीरीज को मौके के रूप में लेना चाहिए न कि दबाव के रूप में। यहां उन्हें मौका मिलेगा कि वह प्रदर्शन करें और लंबे समय तक खेलने का जज्बा दिखा सकें। बता दें कि वेस्ट इंडीज के खिलाफ होने वाले पहले टेस्ट मैच से एक दिन पहले बोर्ड ने 12 खिलाड़ियों की लिस्ट जारी है, जिसमें पृथ्वी शॉ का भी चयन है।

करुण नायर का क्या था कहना

बिना खेले टीम से बाहर किए जाने के बारे में करुण नायर ने 'मेरी टीम के चयनकर्ताओं और प्रबंधन से किसी भी प्रकार की कोई बातचीत नहीं हुई। यह मुश्किल है, लेकिन मैंने खुद से आगे बढ़कर कुछ नहीं पूछा। हां, हमारी अभी तक कोई बात नहीं हुई है। हालांकि, उनके इस दावे को चीफ सिलेक्टर एमएसके प्रसाद ने गलत करार दिया था।

हरभजन ने चयनकर्ताओं पर बोला था हमला

हरभजन ने मंगलवार को एक इंटरव्यू में कहा, 'यह ऐसा रहस्य है जिसे हल करने की जरूरत है। तीन महीने तक बेंच पर बैठा खिलाड़ी इतना बुरा कैसे हो सकता है कि वह टीम में बने रहने के लायक भी नहीं है।'

आज का राशिफल

मेष: गणेशजी कहते हैं कि आज का दिन नौकरीपेशा और व्यापारियों के लिए शुभ है। नये काम शुरू करने की प्रेरणा मिलेगी। लेखन कार्य के लिए अच्छा दिन है।

वृषभ: आज आपका सुविधापूर्ण व्यवहार आपको मुश्किल में डाल सकता है। आज हठ छोड़कर सरलता को अपनाएं। लेखक, कारीगर और कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेगा।

मिथुन: आज परिवार और दोस्तों के साथ अच्छा वक्त बिताएंगे। आर्थिक लाभ मिलने के योग हैं। मन में किसी भी प्रकार की नकारात्मक भावना को प्रवेश न करने दें।

कर्क: खर्च अधिक हो सकता है। बोली पर संयम रखें, किसी के साथ वाद-विवाद या झगड़े में न पड़ें। आरोग्य के प्रति लापरवाह न रहें। मान प्रतिष्ठा की हानि हो सकती है।

सिंह: आज किसी बात पर निर्णय न ले पाने के कारण परेशानी हो सकती है। महिला मित्रों की तरफ से लाभ मिलेगा। संतान से मुलाकात होगी।

कन्या: व्यापारी वर्ग और नौकरीपेशा दोनों के लिए आज का दिन लाभदायी है। उच्च अधिकारियों की कृपा मिलेगी। व्यापार में लाभ होगा।

तुला: आज ऑफिस में किसी वजह से विवाद हो सकता है। व्यवसाय में परेशानी हो सकती है। धार्मिक यात्रा का भी योग है। प्रतिस्पर्धियों के साथ वाद-विवाद टालें।

वृश्चिक: गुस्से पर काबू रखें। अनैतिक कार्यों से दूर रहें, नए सम्बन्ध बनाने से पहले सोचें। धन खर्च ज्यादा होने से आर्थिक परेशानी का अनुभव करेंगे।

धनु: आज समाज में सम्मान मिलेगा। मित्रों के साथ मुलाकात होगी। अच्छे भोजन और सुंदर परिधान से आपका मन खुश रहेगा। विपरीत लिंग के व्यक्ति यों का साथ अच्छा लगेगा।

मकर: आज आपके व्यापार धंधे में खूब सफलता मिलेगी। पैसों का लेनदेन सावधानी से करें। देश-विदेश में व्यवसाय करने वालों को फायदा होगा।

कुंभ: आपके विचारों में लगातार परिवर्तन रहेगा। हरी वर्ग अपनी वाणी पर काबू रखें। यात्रा टालें। आकस्मिक खर्च की तैयारी रखनी पड़ेगी।

मीन: मकान, वाहन, वगैरह के दस्तावेजों को अत्यंत संभालकर रखना होगा। परिवार वाद-विवाद से बचें। धन प्रतिष्ठा की हानि हो सकती है। पानी से बचकर रहें।

खाना/खजाना- खील की मिठाई

सामग्री:- 4 कप खील, डेढ़ कप चीनी, 1 कप दूध , 1 कप दूध, 1 कप खोया, 2-3 बादाम कटा हुआ, खाने का पीला रंग थोड़ा सा।

विधी :- खीलों को साफ करके 15 मिनट दूध में भिगो लीजिए। भीग जाने पर खीलों को हलका सा मसल लीजिये।

एक कड़ाही में खोया डाल कर धीमी आंच पर भूनें । इसी समय इसमें मसली हुई खील और पीला रंग डाल दीजिये। खीलों में से पानी सूख जाने तक खोए के साथ भूनिये। अब कड़ाही को आंच पर से उतार कर भूने हुए मिश्रण में चीनी डाल दीजिये और उसे खोए के साथ अच्छी तरह मिला लीजिए।

मिश्रण को घी लगी थाली में उलट लीजिए और चम्मच से बराबर फैला दीजिए उपर से कतरे हुए बादाम डाल दीजिए ।

ठंडा हो जाने पर मिश्रण को मनचाहे आकार में परोसिये. छोटे-छोटे कागज के कपों में सजा कर परोसिये।

शब्द सामर्थ्य

बाएं से दाएं
1. आय व्यय का लेखा-जोखा, गणित, एकाउंट 3. विनती, अदब 6. दृष्टांत, सुपुर्दगी, उदाहरण 7. मूल्यवान, बहुमूल्य 8. अच्छे ढंग में गाया जाने वाला सुंदर गीत 10. बराबर, सम 12. मुख, चेहरा 14. अनुकृति, अनुकरण, असल का विलोम 17. दिमाग, मस्तिष्क 18. मनोहर, सुंदर, इच्छित, प्यारा 19. गर्मी, ताप 21. रसिया, प्रेमी, रसपान करने वाला 23. दबाव, भार 24. भीख 25. काम से जी चुराने वाला, आलसी।

ऊपर से नीचे
1. साहस, वीरता, बहादुरी 2. बहिन, प्रवाहित होना 3. प्रणय क्रीडा, सुखोपभोग, हावभाव 4. विश्वास, प्रतीति 5. इंतजार 9. खाने-पीने का सामान, रसद 11. नशीला, मदभरा 12. घायल, जख्मी 13. झुकना, प्रणाम, नमस्कार 14. दृष्टि, निगाह 15. तीव्रइच्छा 16. अर्थ, अभिप्राय, स्वार्थ 20. इम्तिहान, योग्यता आदि को परखना 22. जुल्म, अन्याय 23. पत्नी, बीवी, एक प्रत्यय।

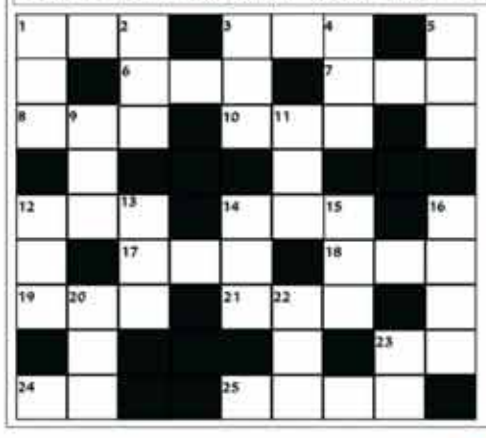

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 47 का हल

दा	ढ़ी		की		खा	सो	आ	म
वा		त	म	त्रा			जा	
न	जा	क	त		बा	अ	द	ब
ल		ली		वि	ला	प		हा
	अ	फ	सा	ना		मा	हि	र
दा	ब			श	गु	न		
न		उ	प	का	र		शि	
व		त्स		र		त	क	ला
	सा	व	न		गु	रु	वा	र

सू-दोकू

		3					7	
9				6		3		8
	7		9		5		6	
						1		9
3		8		7			5	
	1		3		9			7
		2		8		7		
	8				2		4	3
			1					

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक रख सकते है।
3. खड़ी से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.47 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6